



New beby jini kapil ji

31 Jan 2026

05:09 PM

Indore

Model: Web-MyKundli

Order No: 121156801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 31/01/2026
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 17:09:09 घंटे
इष्ट _____: 25:07:00 घटी
स्थान _____: Indore
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:42:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:54:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 16:42:45 घंटे
वेलान्तर _____: -00:13:24 घंटे
साम्पातिक काल _____: 01:25:35 घंटे
सूर्योदय _____: 07:06:20 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:13:35 घंटे
दिनमान _____: 11:07:14 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 17:22:46 मकर
लग्न के अंश _____: 04:04:02 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: पुनर्वसु - 3
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: प्रीति
करण _____: गर
गण _____: देव
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: हा-हर्षा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	माघ	11
पंजाबी	संवत : 2082	माघ	18
बंगाली	सन् : 1432	माघ	17
तमिल	संवत : 2082	थई	18
केरल	कोल्लम : 1201	मकरम	17
नेपाली	संवत : 2082	माघ	18
चैत्रादि	संवत : 2082	माघ	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2082	माघ	शुक्ल 13

पंचांग

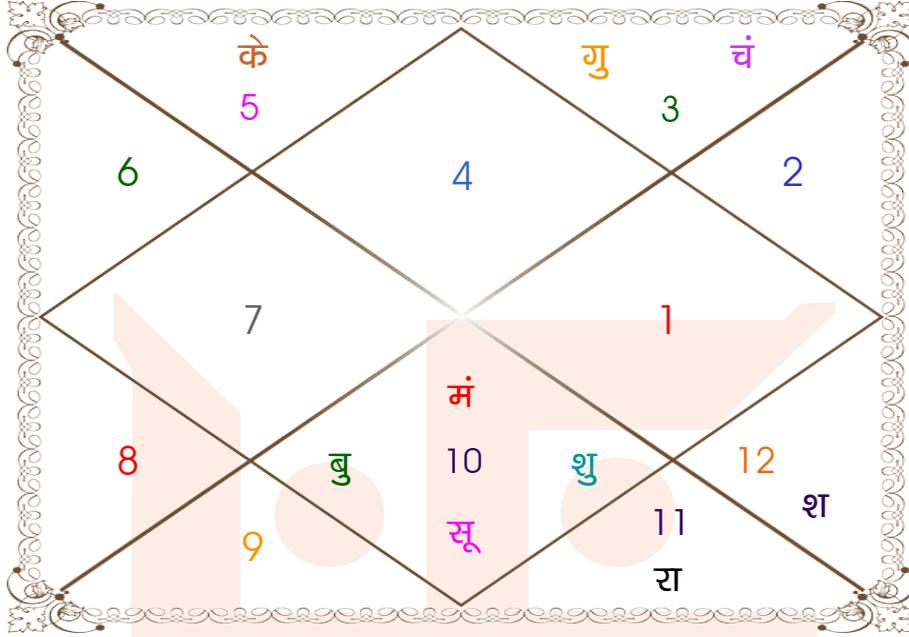
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 08:25:46
जन्म तिथि _____ : 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 25:33:58 घंटे
जन्म योग _____ : पुनर्वसु
सूर्योदय कालीन योग _____ : विष्कुम्भ
योग समाप्ति काल _____ : 13:33:16 घंटे
जन्म योग _____ : प्रीति
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैतिल
करण समाप्ति काल _____ : 08:25:46 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 34:14:38
भभोग _____ : 55:16:40
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 6 वर्ष 0 मा 25 दि

घात चक्र

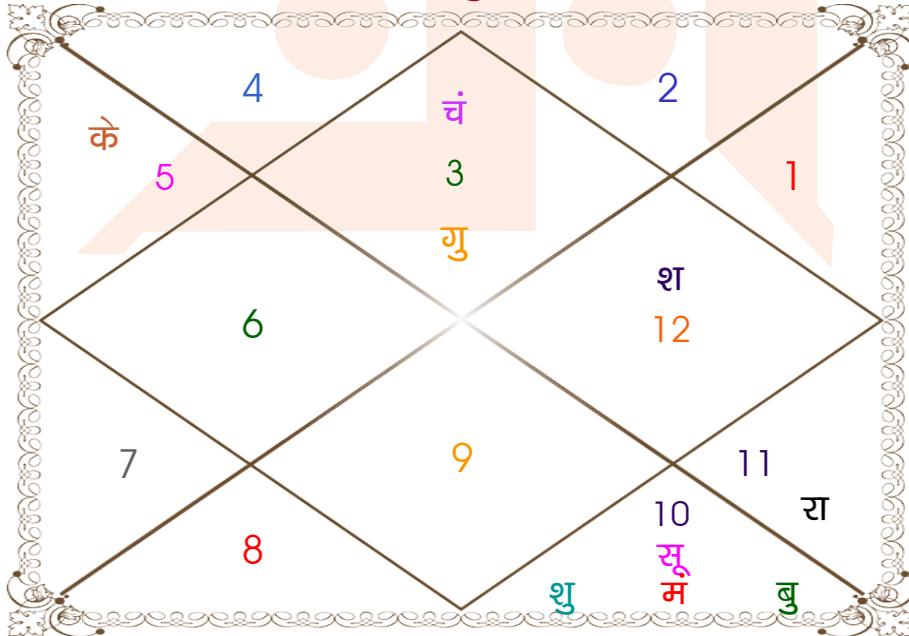
मास _____ : आषाढ़
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : सोमवार
नक्षत्र _____ : स्वाति
योग _____ : परिघ
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : कर्क
सूर्य _____ : मीन
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : मेष
बुध _____ : मकर
गुरु _____ : वृष
शुक्र _____ : मिथुन
शनि _____ : कुम्भ
राहु _____ : कर्क

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

श		चं गु
रा		ल
शु म सू बु		के

लग्न कुण्डली

गु चं		श रा
ल		मं सू शु बु
के		

विंशोत्तरी
गुरु 6वर्ष 0मा 25दि
गुरु

31/01/2026

27/02/2136

गुरु	26/02/2032
शनि	26/02/2051
बुध	26/02/2068
केतु	26/02/2075
शुक्र	26/02/2095
सूर्य	26/02/2101
चन्द्र	27/02/2111
मंगल	27/02/2118
राहु	27/02/2136

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 9मा 3दि
पिंगला

31/01/2026

04/11/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	31/01/2026
सिद्धा	06/05/2026
संकटा	15/10/2026
मंगला	04/11/2026

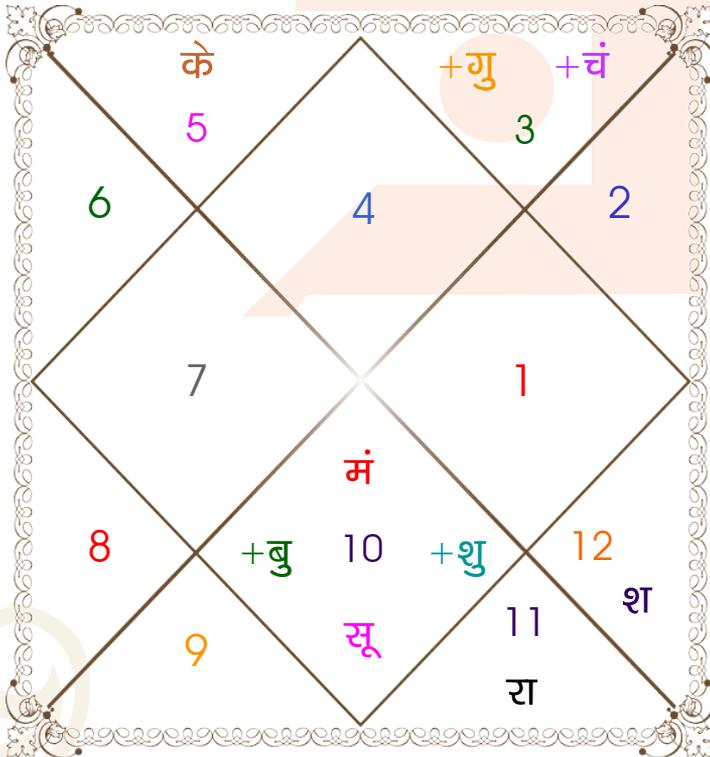
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	04:04:02	315:50:26	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	---
सूर्य			मक	17:22:46	01:00:53	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
चंद्र			मिथु	28:16:32	14:27:32	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
मंगल	अ		मक	12:06:07	00:46:57	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	उच्च राशि
बुध	अ		मक	24:20:33	01:45:50	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	सम राशि
गुरु	व		मिथु	23:11:41	00:06:45	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र	अ		मक	23:18:32	01:15:17	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	सूर्य	मित्र राशि
शनि			मीन	04:22:00	00:05:53	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
राहु	व		कुंभ	14:55:44	00:04:06	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	14:55:44	00:04:06	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	03:14:31	00:00:11	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	05:54:08	00:01:39	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो			मक	09:27:25	00:01:54	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			मीन	28:54:14	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	शनि	--

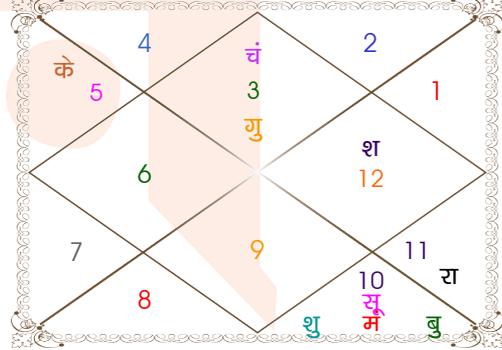
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:24

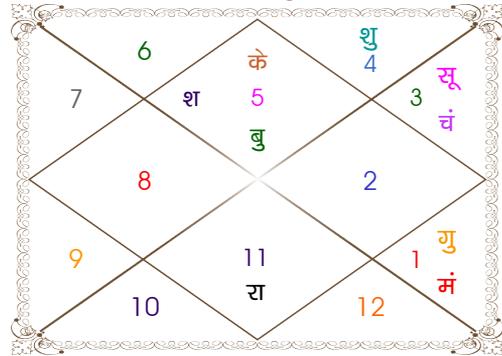
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 18:12:24	कर्क 04:04:02
2	कर्क 18:12:24	सिंह 02:20:46
3	सिंह 16:29:08	कन्या 00:37:30
4	कन्या 14:45:52	कन्या 28:54:14
5	तुला 14:45:52	वृश्चिक 00:37:30
6	वृश्चिक 16:29:08	धनु 02:20:46
7	धनु 18:12:24	मकर 04:04:02
8	मकर 18:12:24	कुम्भ 02:20:46
9	कुम्भ 16:29:08	मीन 00:37:30
10	मीन 14:45:52	मीन 28:54:14
11	मेष 14:45:52	वृष 00:37:30
12	वृष 16:29:08	मिथुन 02:20:46

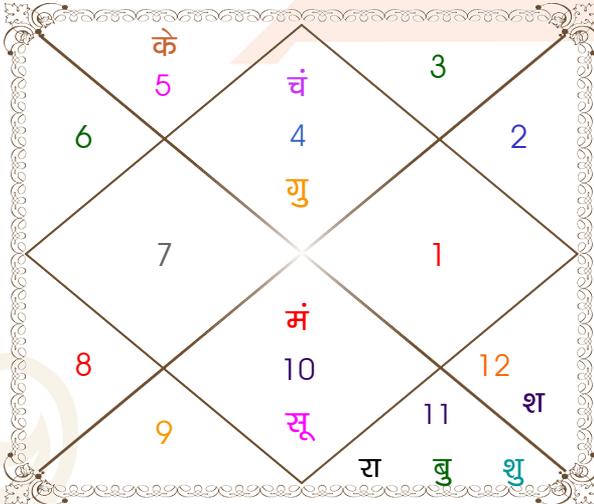
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	04:04:02
2	कर्क	28:46:47
3	सिंह	26:56:42
4	कन्या	28:54:14
5	वृश्चिक	02:18:05
6	धनु	04:16:20
7	मकर	04:04:02
8	मकर	28:46:47
9	कुम्भ	26:56:42
10	मीन	28:54:14
11	वृष	02:18:05
12	मिथुन	04:16:20

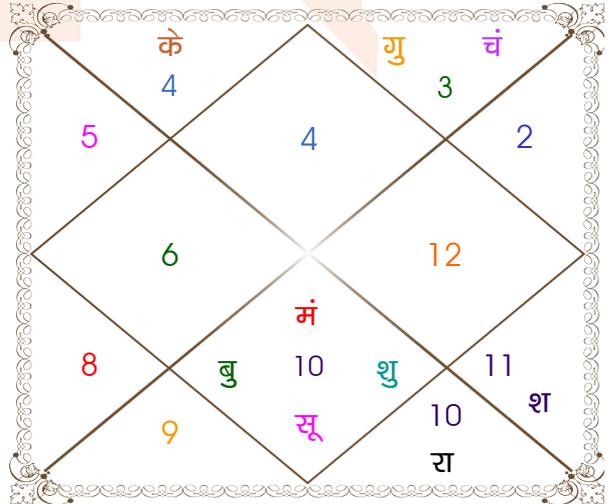
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 6 वर्ष 0 मास 25 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
31/01/2026	26/02/2032	26/02/2051	26/02/2068	26/02/2075
26/02/2032	26/02/2051	26/02/2068	26/02/2075	26/02/2095
00/00/0000	शनि 01/03/2035	बुध 24/07/2053	केतु 24/07/2068	शुक्र 27/06/2078
00/00/0000	बुध 08/11/2037	केतु 22/07/2054	शुक्र 23/09/2069	सूर्य 28/06/2079
00/00/0000	केतु 18/12/2038	शुक्र 21/05/2057	सूर्य 29/01/2070	चंद्र 25/02/2081
31/01/2026	शुक्र 16/02/2042	सूर्य 28/03/2058	चंद्र 30/08/2070	मंगल 27/04/2082
शुक्र 08/09/2026	सूर्य 29/01/2043	चंद्र 27/08/2059	मंगल 26/01/2071	राहु 27/04/2085
सूर्य 28/06/2027	चंद्र 30/08/2044	मंगल 24/08/2060	राहु 14/02/2072	गुरु 27/12/2087
चंद्र 27/10/2028	मंगल 09/10/2045	राहु 13/03/2063	गुरु 20/01/2073	शनि 26/02/2091
मंगल 02/10/2029	राहु 14/08/2048	गुरु 18/06/2065	शनि 01/03/2074	बुध 27/12/2093
राहु 26/02/2032	गुरु 26/02/2051	शनि 26/02/2068	बुध 26/02/2075	केतु 26/02/2095

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
26/02/2095	26/02/2101	27/02/2111	27/02/2118	27/02/2136
26/02/2101	27/02/2111	27/02/2118	27/02/2136	00/00/0000
सूर्य 15/06/2095	चंद्र 28/12/2101	मंगल 26/07/2111	राहु 09/11/2120	गुरु 16/04/2138
चंद्र 15/12/2095	मंगल 29/07/2102	राहु 12/08/2112	गुरु 04/04/2123	शनि 28/10/2140
मंगल 21/04/2096	राहु 28/01/2104	गुरु 19/07/2113	शनि 08/02/2126	बुध 02/02/2143
राहु 16/03/2097	गुरु 29/05/2105	शनि 28/08/2114	बुध 28/08/2128	केतु 09/01/2144
गुरु 02/01/2098	शनि 28/12/2106	बुध 25/08/2115	केतु 15/09/2129	शुक्र 01/02/2146
शनि 15/12/2098	बुध 28/05/2108	केतु 21/01/2116	शुक्र 15/09/2132	00/00/0000
बुध 21/10/2099	केतु 27/12/2108	शुक्र 23/03/2117	सूर्य 10/08/2133	00/00/0000
केतु 26/02/2100	शुक्र 28/08/2110	सूर्य 28/07/2117	चंद्र 09/02/2135	00/00/0000
शुक्र 26/02/2101	सूर्य 27/02/2111	चंद्र 27/02/2118	मंगल 27/02/2136	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 6 वर्ष 1 मा 2 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक	गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु
31/01/2026	08/09/2026	28/06/2027	27/10/2028	02/10/2029
08/09/2026	28/06/2027	27/10/2028	02/10/2029	26/02/2032
00/00/0000	सूर्य 23/09/2026	चंद्र 07/08/2027	मंगल 15/11/2028	राहु 11/02/2030
00/00/0000	चंद्र 17/10/2026	मंगल 05/09/2027	राहु 06/01/2029	गुरु 08/06/2030
00/00/0000	मंगल 03/11/2026	राहु 17/11/2027	गुरु 20/02/2029	शनि 25/10/2030
00/00/0000	राहु 17/12/2026	गुरु 20/01/2028	शनि 15/04/2029	बुध 26/02/2031
00/00/0000	गुरु 25/01/2027	शनि 07/04/2028	बुध 02/06/2029	केतु 18/04/2031
31/01/2026	शनि 12/03/2027	बुध 15/06/2028	केतु 22/06/2029	शुक 11/09/2031
शनि 26/02/2026	बुध 23/04/2027	केतु 13/07/2028	शुक 18/08/2029	सूर्य 25/10/2031
बुध 13/07/2026	केतु 10/05/2027	शुक 02/10/2028	सूर्य 04/09/2029	चंद्र 06/01/2032
केतु 08/09/2026	शुक 28/06/2027	सूर्य 27/10/2028	चंद्र 02/10/2029	मंगल 26/02/2032

शनि - शनि	शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक	शनि - सूर्य
26/02/2032	01/03/2035	08/11/2037	18/12/2038	16/02/2042
01/03/2035	08/11/2037	18/12/2038	16/02/2042	29/01/2043
शनि 18/08/2032	बुध 18/07/2035	केतु 02/12/2037	शुक 29/06/2039	सूर्य 06/03/2042
बुध 21/01/2033	केतु 13/09/2035	शुक 07/02/2038	सूर्य 25/08/2039	चंद्र 04/04/2042
केतु 26/03/2033	शुक 24/02/2036	सूर्य 27/02/2038	चंद्र 30/11/2039	मंगल 24/04/2042
शुक 25/09/2033	सूर्य 13/04/2036	चंद्र 02/04/2038	मंगल 05/02/2040	राहु 15/06/2042
सूर्य 19/11/2033	चंद्र 04/07/2036	मंगल 26/04/2038	राहु 28/07/2040	गुरु 31/07/2042
चंद्र 18/02/2034	मंगल 31/08/2036	राहु 25/06/2038	गुरु 29/12/2040	शनि 24/09/2042
मंगल 23/04/2034	राहु 25/01/2037	गुरु 18/08/2038	शनि 30/06/2041	बुध 12/11/2042
राहु 05/10/2034	गुरु 05/06/2037	शनि 21/10/2038	बुध 11/12/2041	केतु 03/12/2042
गुरु 01/03/2035	शनि 08/11/2037	बुध 18/12/2038	केतु 16/02/2042	शुक 29/01/2043

शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु	बुध - बुध
29/01/2043	30/08/2044	09/10/2045	14/08/2048	26/02/2051
30/08/2044	09/10/2045	14/08/2048	26/02/2051	24/07/2053
चंद्र 19/03/2043	मंगल 22/09/2044	राहु 14/03/2046	गुरु 16/12/2048	बुध 30/06/2051
मंगल 21/04/2043	राहु 22/11/2044	गुरु 30/07/2046	शनि 11/05/2049	केतु 21/08/2051
राहु 17/07/2043	गुरु 15/01/2045	शनि 11/01/2047	बुध 19/09/2049	शुक 14/01/2052
गुरु 02/10/2043	शनि 20/03/2045	बुध 08/06/2047	केतु 12/11/2049	सूर्य 27/02/2052
शनि 02/01/2044	बुध 16/05/2045	केतु 07/08/2047	शुक 16/04/2050	चंद्र 11/05/2052
बुध 24/03/2044	केतु 09/06/2045	शुक 28/01/2048	सूर्य 01/06/2050	मंगल 01/07/2052
केतु 26/04/2044	शुक 16/08/2045	सूर्य 20/03/2048	चंद्र 17/08/2050	राहु 10/11/2052
शुक 01/08/2044	सूर्य 05/09/2045	चंद्र 15/06/2048	मंगल 10/10/2050	गुरु 07/03/2053
सूर्य 30/08/2044	चंद्र 09/10/2045	मंगल 14/08/2048	राहु 26/02/2051	शनि 24/07/2053

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

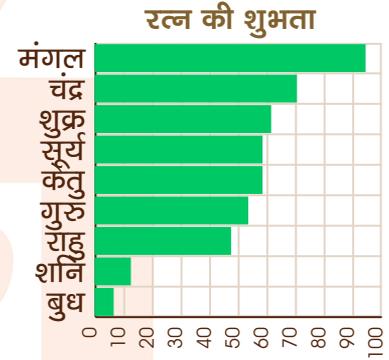
मूलांक	4
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	94%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	70%	कम खर्च, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	61%	दम्पति, धनार्जन, सुख
माणिक्य	सूर्य	58%	दम्पति, धन
लहसुनिया	केतु	58%	धन, दम्पति
पुखराज	गुरु	53%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
गोमेद	राहु	47%	दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
नीलम	शनि	12%	नेष्ट भाग्य, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
पन्ना	बुध	6%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	26/02/2032	64%	77%	100%	0%	66%	47%	12%	47%	58%
शनि	26/02/2051	41%	58%	81%	19%	53%	67%	38%	55%	41%
बुध	26/02/2068	64%	58%	94%	31%	53%	67%	12%	47%	58%
केतु	26/02/2075	41%	58%	100%	6%	53%	67%	0%	22%	70%
शुक्र	26/02/2095	41%	58%	94%	19%	53%	73%	25%	55%	64%
सूर्य	26/02/2101	70%	77%	100%	6%	59%	47%	0%	22%	41%
चंद्र	27/02/2111	64%	83%	94%	19%	53%	61%	12%	22%	41%
मंगल	27/02/2118	64%	77%	100%	0%	59%	61%	12%	22%	64%
राहु	27/02/2136	41%	58%	81%	6%	53%	67%	25%	61%	41%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
अशुभ
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

धनार्जन
कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
पराक्रम
दम्पति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति जन्म कुण्डली में सप्तम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष समाप्त हो जाता है अतः ऐसा मंगल आपको अधिकांशतया शुभ फल ही प्रदान करेगा। फलतः आपका एवं आपके पति का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। पति के स्वभाव में उग्रता का समावेश हो सकता है। लेकिन इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुखोपभोग के साधनों को अर्जित करेंगी एवं धन धान्य से युक्त रह कर सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

यद्यपि आपके लिए यह मंगल शुभ फल दायक रहेगा परन्तु आपके विवाह में इसके कारण विलम्ब हो सकता है लेकिन विवाह अत्यन्त ही शान्ति पूर्ण ढंग से सम्पन्न होगा। आपको किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के उपरान्त आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही पति के स्वभाव में यदा कदा क्रोधाधिक्य की प्रवृत्ति उत्पन्न होगी जिससे अल्प समय के लिए आपस में तनाव तथा कटुता के संबंध उत्पन्न होंगे। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुण्डली में सप्तम भाव में मंगल स्थित होने से आप पति के रूप में किसी योग्य पुरुष को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अपने दाम्पत्य जीवन को प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप अपने कार्य क्षेत्र में प्रायः सफलता एवं उन्नति प्राप्त करेंगी तथा समाज में पूर्ण मान सम्मान प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगी। लग्न पर दृष्टि होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा क्रोध के भाव की प्रबलता दृष्टिगोचर होगी। साथ ही द्वितीय भाव पर दृष्टि होने से आपका परिवारिक जीवन सामान्यतया सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प समय के लिए परिवारिक वातावरण में तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

इसके अतिरिक्त विद्या अध्ययन में आप हमेशा सफल रहेंगी एवं इस विषय में आप को किसी भी प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आप शान्ति एवं सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक पुरुष या ऐसे मंगली पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसका मंगली दोष उचित नियम के अनुसार भंग हो रहा हो। ऐसे उचित पुरुष से दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करके आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगी तथा आनन्द पूर्वक समस्त आवश्यक सुखों का उपभोग करेंगी। एक भाग्यशाली महिला के रूप में सुखैश्वर्य से सम्पन्न तथा धनधान्य से युक्त रहकर प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली में मिलान के समय यदि पुरुष की कुण्डली में सप्तम भाव में ही मंगल स्थित हो तो उसकी यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भाव में मांगलिक होने से आप लोगों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा। अतः दाम्पत्य सुख के उपभोग में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होंगे। साथ ही अन्य भावों में मंगल स्थित यदि दोष मुक्त हो रहा हो तो दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। इस प्रकार यदि आप सावधानी पूर्वक मिलान करके वर का चुनाव करेंगी तो सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रुचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, घ्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(31/01/2026 - 26/02/2032)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 31/01/2026 को शुरू और 26/02/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव, हानि और बाधा, फिजूलखर्च, व्यय, पारिवारिक अलगाव, सुदूर स्थानों की यात्रा, धोखाधड़ी और भाग्यहीनता, कैद, अस्पताल में भर्ती होना, धोखा, घोटाला, कलंक तथा गुप्त शोक, बार्थी आँख, शयन सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति द्वादश भाव में तथा दृष्टि चतुर्थ, षष्ठ तथा अष्टम भाव पर है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। यह 16 साल की अवधि आपके लिए उतार-चढ़ाव से युक्त होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु की दृष्टि द्वादश भाव से षष्ठ भाव अर्थात् शत्रु भाव या रोग भाव पर होने के फलस्वरूप आपको न तो कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या होने की संभावना है और न ही कोई बड़ी दुर्घटना जो आपको शारीरिक क्षति पहुँचा सके। आपका जीवन नियमित रहेगा।

अर्थ संपत्ति :

गुरु की अष्टम भाव अर्थात् अचानक उन्नति के भाव और मांगलिक कार्य के भाव (चतुर्थ और षष्ठ भावों के अतिरिक्त) तथा चतुर्थ भाव अर्थात् सुख स्थान पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको चल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का अवसर प्राप्त होगा तथा आप भोग-विलास की वस्तुओं पर खर्च करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव को शक्तिशाली बना रहा है। यह हानि और खर्च तथा अलगाव आदि का भाव है। इसके फलस्वरूप आप जो भी व्यवसाय शुरू करेंगे आपको एक या अनेक कठिनाइयों या समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आपको अंतिम कदम सावधानीपूर्वक लेने की सलाह दी जाती है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण होगा तथा आपके जीवन साथी आपके साथ पूर्ण सहयोग करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे। परिवार में कुछ उदासी हो सकती है। आप अपने सुखी परिवार का आनन्द उठाएँगे।

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(31/01/2026 - 08/09/2026)**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 31/01/2026 को प्रारंभ होकर 08/09/2026 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन सुखी रहेगा। विवाह हो सकता है। जीवनसाथी से खुशियां मिलेंगी, उनसे धन का लाभ हो सकता है। आकर्षक और मधुर व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध होंगे। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज की अदायगी कर सकेंगे। नेकी के कार्य करेंगे। भाग्य साथ देगा। कला में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता सफल होंगे, उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। माता धनी बनेंगी; वाहन और अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश से लाभ, संतान से खुशी, उत्तम शिक्षा, कला में रुचि, यात्रा, धन, सुख-साधन, अध्यात्म और धर्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान की कला में रुचि होगी; वे प्रसिद्ध और सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो सफलता आसानी से मिल जाएगी, यात्रा होगी, विभिन्न हॉबियों में हिस्सा लेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धन आएगा। परामर्शदाता और व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कन्याओं को खीर खिलाएं।

**अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(08/09/2026 - 28/06/2027)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/09/2026 को प्रारंभ होकर 28/06/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपकी प्रोन्नति हो सकती है। सम्मान में वृद्धि होगी। आयु में बड़े लोग और उच्चाधिकारी आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे। विदेश यात्रा हो सकती है। साझेदार से लाभ हो सकता है। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। व्यापार में लाभ होगा। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। विरोधियों पर विजय होगी। जीवन में प्रगति होगी। सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे, धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता को सफलता मिलेगी; उच्चपद प्राप्त करेंगे। माता अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के

लिए निवेश से लाभ, दान धर्म, लंबी यात्रा, भाग्य में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सुख-साधन संपन्न होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धन लाभ होगा; कार्यालय में वातावरण मित्रतापूर्ण होगा, सब कार्य सफलतापूर्वक संपन्न होंगे। परामर्शदाताओं के सम्मान में वृद्धि होगी, धनागम होगा। व्यापारी सफल रहेंगे, धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मामूली पित्त संबंधी व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र
(28/06/2027 - 27/10/2028)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 28/06/2027 को आरंभ होकर 27/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। विदेश भी जा सकते हैं। खर्च बढ़ सकते हैं। अध्यात्म, तंत्र-मंत्र, धर्म आदि में रुचि बढ़ सकती है। मन को खिन्न होने से बचाएं। स्पर्धियों पर विजय होगी। कर्ज का भुगतान कर सकेंगे। मुकदमे में जीत होगी।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय सुविधा संपन्न होगा; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति से लाभ होगा, वाहन सुख रहेगा। माता का भाग्य बहुत अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, उत्तम धनार्जन और सुख-साधनों का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। शिक्षा में फेरबदल संभव है। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक लाभ हो सकता है, तबादला संभव है, बोनस, ग्रेच्युटी आदि से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों के माध्यम से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को लाभ प्राप्त करने के लिए वाक्शक्ति का सहारा लेना होगा। व्यापारियों के स्पर्धी बढ़ सकते हैं।

मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - मंगल
(27/10/2028 - 02/10/2029)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/10/2028 को प्रारंभ होकर वद 02/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा; धनी और शक्तिशाली बनेंगे। व्यापार में लाभ होगा। पारिवारिक जीवन में मामूली तनाव हो सकता है। कार्यक्षेत्र में वांछित सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे, सफलता ओर प्रसन्नता मिलेगी, शिक्षा उत्तम होगी। कटुवचन बोलने से बचें। आप बुद्धिमान और कल्पनाशील हैं। स्वयं के परिश्रम से धनी बन सकते हैं।

आपके जीवनसाथी का आत्म-विश्वास बढ़ेगा। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता को अचल संपत्ति से आय होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में प्रगति, निवेश से लाभ, यात्रा, सफलता और उत्साह के कारण प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजयी होगी; साख्र उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो स्वस्थ और धनी होंगे; भाई-बहनों से संबंध उत्तम होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम रहेगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे, आय अच्छी होगी, प्रसिद्धि प्राप्त होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - राहु
(02/10/2029 - 26/02/2032)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 31/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 02/10/2029 को प्रारंभ होकर 26/02/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से धनलाभ होगा। सट्टेबाजी आदि से अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। अध्यात्म में मन लगेगा। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। भौतिक सुख-साधन प्राप्त करने की इच्छा पूर्ण होगी। प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे; उनसे लाभ होगा। धन की कमी से बचने के लिए धन का सुनियोजित उपयोग आवश्यक है।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता

को निवेश से लाभ होगा और संतान से सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय, कार्यक्षेत्र में सफलता, धन, लंबी यात्रा और समाजसेवा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, घर में सुख मिलेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को हर प्रकार से धनलाभ होगा।

मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए नीले वस्त्र, उड़द और सतनजा दान दें।

